द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी

कक्षा IX-X

भारत एक बहुभाषी देश है जिसमें बहुत-सी क्षेत्रीय भाषाएँ रची-बसी हैं। भाषिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भिन्न होनेके बावजूद भारतीय परंपरा में बहुत कुछ ऐसा है जो एक दूसरे को जोड़ता है। यही कारण है कि मातृभाषा के रूप में अलग भाषा को पढ़ने वाला विद्यार्थी जब दूसरी भाषा के रूप में हिंदी का चुनाव करता है तो उसके पास अभिव्यक्ति का एक दृढ़ आधार पहली भाषा के रूप में पहले से ही मौजूद होता है। इसीलिए छठी से आठवीं कक्षा में सीखी हुई हिंदी का विकास भी वह तेज़ी से करने लगता है। आठवीं कक्षा तक वह हिंदी भाषा में सुनने, पढ़ने, लिखने और कुछ-कुछ बोलने का अभ्यास कर चुका होता है। हिंदी की बाल पत्रिकाएँ और छिटपुट रचनाएँ पढ़ना भी अब उसे आ गया है। इसीलिए जब वह नवीं, दसवीं कक्षा में हिंदी पढ़ेगा तो जहाँ एक ओर हिंदी भाषा के माध्यम से सारे देश से जुड़ेगा वहीं दूसरी ओर अपने क्षेत्र और परिवेश को हिंदी भाषा के माध्यम से जानने की कोशिश भी करेगा क्योंकि किशोर वय के इन बच्चों के मानसिक धरातल का विकास विश्व-स्तर तक पहुँच चुका होता है।

शिक्षण उद्देश्य

- दैनिक जीवन में हिंदी में समझने-बोलने के साथ-साथ लिखने की क्षमता का विकास करना।
- हिंदी के किशोर-साहित्य, अखबार व पत्रिकाओं को पढ़कर समझ पाना और उसका आनंद उठाने की क्षमता का विकास करना।
- औपचारिक विषयों और संदर्भों में बातचीत में भाग ले पाने की क्षमता का विकास करना।
- हिंदी के ज़रिये अपने अनुभव संसार को लिखकर सहज अभिव्यक्ति कर पाने में सक्षम बनाना।
- संचार के विभिन्न माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी के विभिन्न रूपों को समझने की योग्यता का विकास करना।
- कक्षा में बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक संदर्भों के प्रति संवेदनशील सकारात्मक सोच बनाना।
- अपनी मातृभाषा और परिवेशगत भाषा को साथ रखकर हिंदी की संरचनाओं की समझ बनाना।

शिक्षण युक्तियाँ :

- द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही हिंदी भाषा का स्तर पढ़ने और पढ़ाने दोनों ही दृष्टियों से मातृभाषा सीखने की तुलना में कुछ मंथर गति से चलेगा। यह गति धीरे-धीरे बढ़ सके, इसके लिए हिंदी अध्यापकों को बड़े धीरज से अपने अध्यापन कार्यक्रमों को नियोजित करना होगा। किसी भी द्वितीय भाषा में निपुणता प्राप्त करने-कराने का एक ही उपाय है- उस भाषा का लगातार रोचक अभ्यास करना-कराना। ये अभ्यास जितने अधिक रोचक, सक्रिय एवं प्रासंगिक होंगे विद्यार्थियों की भाषिक उपलब्धि भी उतनी ही तेज़ी से हो सकेगी। मुखर भाषिक अभ्यास के लिए वार्तालाप, रोचक कहानी सुनना-सुनाना, घटना वर्णन, चित्र-वर्णन, संवाद, वाद-विवाद, अभिनय, भाषण प्रतियोगिताएँ, कविता पाठ और अंत्याक्षरी जैसी गतिविधियों का सहारा लिया जा सकता है।
- मध्यकालीन काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए ज़रूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो-वीडियो कैसेट तैयार किए जाएँ। अगर आसानी से कोई गायक/गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन-शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।

- वृत्तचित्रों और फ़ीचर फ़िल्मों को शिक्षण-सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की ज़रूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के ज़रिए सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग-अलग छटा दिखाई जा सकती है।
- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक उपस्थिति से बेहतर यह है शिक्षक के हाथ में तरह-तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देख सकें और शिक्षक उनका कक्षा में अलग-अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सकें।
- भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में इनके इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुँचकर संतुष्ट होने की जगह वे अधिकतम अर्थ की खोज करने का अर्थ समझ जाएँगे। इससे शब्दों की अलग-अलग रंगत का पता चलेगा और उनमें संवेदनशीलता भी बढ़ेगी। वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएँगे।

व्याकरण के बिंदु

कक्षा IX

- वर्ण-विच्छेद, वर्तनी : **j~** के विभिन्न रूप, बिंदु-चंद्रबिंदु, अर्धचंद्राकार, नुक्ता
- तरह-तरह के पाठों के संदर्भ में शब्दों के अवलोकन द्वारा उपसर्ग, प्रत्यय और समास शब्दों की पहचान।
- वाक्य के स्तर पर पर्यायवाची, विलोम और अनेकार्थी शब्दों का सुचिंतित प्रयोग
- मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग और उनके लिए उचित संदर्भ स्थितियों का वर्णन

कक्षा X

- शब्द, पद और पदबंध में अंतर
- मिश्र और संयुक्त वाक्यों की संरचना और अर्थ, वाक्य रूपांतरण
- शब्दों के अवलोकन द्वारा संधि की पहचान, कुछ और उपसर्गों, प्रत्ययों और समास शब्दों की पहचान और उनके अर्थ का अनुमान
- मुहावरों और लोकोक्तियों का अंतर और उनका प्रयोग
- वाक्य के स्तर पर पर्यायवाची, विलोम और अनेकार्थी शब्दों का सुचिंतित प्रयोग

फॉरमैटिव मूल्यांकन

श्रवण (सुनना) सुनने और बोलने की योग्यताएँ

- प्रवाह के साथ बोली जाती हुई हिन्दी को अर्थबोध के साथ समझना। वार्ताओं या संवादों को समझ सकना।
- हिन्दी शब्दों का ठीक उच्चारण कर सकना तथा हिन्दी के स्वाभाविक अनुतान का प्रयोग करना।
- सामान्य विषयों पर बातचीत कर सकना और परिचर्चा में भाग ले सकना।
- हिन्दी कविताओं को उचित लय, आरोह-अवरोह और भाव के साथ पढ़ सकना।
- सरल विषयों पर कुछ तैयारी के साथ दो-चार मिनट का भाषण दे सकना।
- हिन्दी में स्वागत कर सकना, परिचय दे सकना और धन्यवाद दे सकना।
- हिन्दी अभिनय में भाग ले सकना।

श्रवण (सुनना) का मूल्यांकनः- परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 150 शब्दों का होना चाहिए। परीक्षक को सुनते-सुनते परीक्षार्थी अलग कागज़ पर दिए हुए श्रवण बोधन के अभ्यासों को हल कर सकेंगे। अभ्यास रिक्त स्थान पूर्ति, बहुविकल्पी अथवा सत्य /असत्य का चुनाव आदि विधाओं में हो सकते हैं।

वाचन (बोलना) का परीक्षण

- चित्रों के क्रम पर आधारित वर्णन : इस भाग में अपेक्षा की जाएगी कि परीक्षार्थी विवरणाात्मक भाषा का प्रयोग करें।
- किसी चित्र का वर्णन : (चित्र लोगों या स्थानों के हो सकते हैं)।
- किसी निर्धारित विषय पर बोलना, जिससे वह अपने व्यक्तिगत अनुभव का प्रत्यास्मरण कर सके।
- कोई कहानी सुनाना या किसी घटना का वर्णन करना। यहाँ इस तथ्य पर बल देना आवश्यक है कि संपूर्ण सत्र के दौरान वाचन कौशलों का मूल्यांकन एक नियमित व सतत प्रक्रिया होनी चाहिए। वार्तालाप कौशलों के मूल्यांकन के लिए एक मापक्रम नीचे दिया गया है। इसमें प्रत्येक कौशल के लिए छात्रों को शून्य से दस के मध्य अंक प्रदान किये जाते हैं परंतु 1,3,5,7,तथा 9 पट्टिकाओं हेतु ही विनिर्दिष्टताएँ स्पष्ट की गई है। इस मापक्रम का उपयोग करते हुए शिक्षक अपने छात्रों को किसी विशिष्ट पट्टिका में रख सकता है उदाहरणार्थ यदि किसी छात्र के कौशल पट्टिका संख्या 3 व 5 के मध्य स्थित हैं तो उसे 4 अंक प्रदान किये जा सकते हैं। विशिष्ट योग्यता वाले छात्रों को 10 अंक भी प्रदान किये जा सकते हैं। छात्रों को वर्ष के प्रारम्भ में ही यह सूचित कर दिया जाना चाहिए कि उनका कक्षा में सहभागिता का मूल्यांकन इस प्रकार किया जाना है।

कौशलों के अंतरण के मूल्यांकन के लिए मापक्रम

श्रवण (सुनना)	वाचन (बोलना)
1. विद्यार्थी में परिचित संदर्भो में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है, किन्तु सुसंबद्ध आशय को नहीं समझ पाता।	*1. शिक्षार्थी केवल अलग-अलग शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है किन्तु एक सुसंबद्ध स्तर पर नहीं बोल सकता।*
3. छोटे सुसंबद्ध कथनों को परिचित संदर्भो में समझने की योग्यता है।	*3. परिचित संदर्भो में केवल छोटे सुसंबद्ध कथनों का सीमित शुद्धता से प्रयोग करता है।*
5. परिचित या अपरिचित दोनों संदर्भो में कथित सूचना को स्पष्ट समझने की योग्यता है। अशुद्धियाँ करता है जिससे प्रेषण में रुकावट आती है।	*5. अपेक्षाकृत दीर्घ भाषण में अधिक जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है अभी भी कुछ अशुद्धियाँ करता है। जिससे प्रेषण में रुकावट आती है।*
7. दीर्घ कथनों की श्रृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझता है और निष्कर्ष निकाल सकता है।	*7. अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित कर धारा प्रवाह रूप में प्रस्तुत कर सकता है। ऐसी गलतियाँ करता है जिनसे प्रेषण में रुकावट नहीं आती।*
9. जटिल कथनों के विचार-बिंदुओं को समझने की योग्यता प्रदर्शित करता है, उद्देश्य के अनुकूल सुनने की कुशलता प्रदर्शित करता है।	*9. उद्देश्य और श्रोता के लिए उपयुक्त शैली को अपना सकता है, केवल मामूली गलतियाँ करता है।*

टिप्पणी :

- परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को तैयारी के लिए कुछ समय दिया जाए।
- विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
- निर्धारित विषय परीक्षार्थी के अनुभव संसार के हों, जैसे : कोई चुटकुला या हास्य-प्रसंग सुनाना, हाल में पढ़ी पुस्तक या देखे गए सिनेमा की कहानी सुनाना।
- जब परीक्षार्थी बोलना प्रारंभ कर दे तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

पठन

पठन क्षमता का मुख्य उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करने में निहित है जो स्वतंत्र रूप से चिन्तन कर सकें तथा जिनमें न केवल अपने स्वयं के ज्ञान का निर्माण की क्षमता हो अपितु वे इसका आत्मावलोकन भी कर सकें।

पढ़ने की योग्यताएँ

- हिन्दी में कहानी, निबंध, यात्रा-वर्णन, जीवनी, पत्र, डायरी आदि को अर्थबोध के साथ पढ़ सकना।
- पाठ्यवस्तु के संबंध में विचार कर सकना और अपना मत व्यक्त कर सकना।
- संदर्भ साहित्य को पढ़कर अपने काम के लायक सूचना एकत्र कर सकना।
- पठित वस्तु का सारांश तैयार कर सकना।

लिखने की योग्यताएँ

- हिन्दी के परिचित और अपरिचित शब्दों की सही वर्तनी लिखना।
- विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग कर सकना।
- लिखते हुए व्याकरण- सम्मत भाषा का प्रयोग करना।
- हिन्दी में पत्र, निबंध, संकेतों के आधार पर कहानियाँ, वर्णन, सारांश आदि लिखना।
- हिन्दी से मातृभाषा में और मातृभाषा से हिन्दी में अनुवाद कर सकना।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

- **वाद-विवाद**

  विषय - शिक्षक विषय का चुनाव स्वयं करें

  आधार बिंदु - तार्किकता, भाषण कला, अपनी बात अधिकारपूर्वक कहना

- **कवि सम्मेलन** - पाठ्यपुस्तक में संकलित कविताओं के आधार पर कविता पाठ

  या

  मौलिक कविताओं की रचना कर कवि सम्मेलन या अंत्याक्षरी

  आधार बिंदुः-

  - अभिव्यक्ति
  - गति, लय, आरोह-अवरोह सहित कविता वाचन
  - मंच पर बोलने का अभ्यास / या मंच भय से मुक्ति

- **कहानी सुनाना/कहानी लिखना या घटना का वर्णन / लेखन**
    - संवाद – भावानुकूल, पात्रानुकूल
    - घटनाओं का क्रमिक विवरण
    - प्रस्तुतीकरण
    - उच्चारण
- **परिचय देना और परिचय लेना** – पाठ्य पुस्तक के पाठों से प्रेरणा लेते हुए आधुनिक तरीके से किसी नए मित्र से संवाद स्थापित करते हुए अपना परिचय सरल शब्दों में देना तथा उसके विषय में जानकारी प्राप्त करना ।
- **अभिनय कला** – पाठों के आधार पर विद्यार्थी अपनी अभिनय प्रतिभा का प्रदर्शन कर भाषा में संवादों की अदायगी का प्रभावशाली प्रयोग कर सकते हैं, नाटक एक सामूहिक क्रिया है । अत: नाटक के लेखन, निर्देशन संवाद, अभिनय, भाषा व उद्देश्य इत्यादि को देखते हुए शिक्षक स्वयं अंकों का निर्धारण कर सकता है ।
- **आशुभाषण** – छात्रों की अनुभव परिधि से संबंधित विषय
- **सामूहिक चर्चा**– छात्रों की अनुभव परिधि से संबंधित विषय

मूल्यांकन के संकेत बिंदुओं का विवरण

प्रस्तुतीकरण

- आत्मविश्वास
- हाव भाव के साथ
- प्रभावशाली
- तार्किकता
- स्पष्टता

विषय वस्तु

- विषय की सही अवधारणा
- तर्क सम्मत

भाषा

- अवसर के अनुकूल शब्द चयन व स्पष्टता ।

उच्चारण

- स्पष्ट उच्चारण, सही अनुतान, आरोह अवरोह ।

कक्षा–9 हिन्दी (पाठ्यक्रम-ब) कोड संख्या (085)

संकलित परीक्षा 1 (एस 1) हेतु भार विभाजन (अप्रैल-सितम्बर)		कुल भार %
विषयवस्तु	अंक	
अपठित बोध	20	30%
व्याकरण	20	
पाठ्यपुस्तक व पूरकपाठ्यपुस्तक	40	
लेखन	10	
फॉरमैटिव परीक्षा(एफ–1 व एफ 2)		20%
कुल भार		50%

संकलित परीक्षा 2 (एस 2) हेतु भार विभाजन (अक्तूबर– मार्च)		कुल भार %
विषयवस्तु	अंक	
अपठित बोध	20	30%
व्याकरण	20	
पाठ्यपुस्तक व पूरकपाठ्यपुस्तक	40	
लेखन	10	
फॉरमैटिव परीक्षा(एफ–3 व एफ 4)		20%
कुल भार		50%

टिप्पणी:

1. **संकलित परीक्षाओं का कुल भार 60 प्रतिशत तथा फॉरमैटिव परीक्षाओं का कुल भार 40 प्रतिशत होगा। फॉरमैटिव परीक्षाओं के 40 प्रतिशत में से प्रत्येक सत्र में 5 प्रतिशत भाग(संपूर्ण वर्ष में 10 प्रतिशत) श्रवण व वाचन कौशलों के परीक्षण हेतु आरक्षित होगा। शेष 30 प्रतिशत फॉरमैटिव मूल्यांकन, पाठ्यचर्या के अन्य अंगों जैसे पठन, लेखन, व्याकरण, पाठ्यपुस्तक व पूरक पाठ्यपुस्तक, पर आधारित होगा ।** इसमें बोलने, सुनने, लिखने व बोध पर आधारित मौखिक, लिखित अथवा कार्यकलापों पर आधारित परीक्षण किया जा सकता है।

2. संकलित परीक्षा एक (एस-1) 90 अंकों की होगी। 90 अंकों को मूल्यांकन के पश्चात 30 अंकों में से परिवर्तित कर लिया जाएगा तदुपरांत ग्रेड का निर्धारण किया जाएगा तथा **संकलित परीक्षा दो (एस-2) 90 अंकों की होगी व** 90 अंकों को मूल्यांकन के पश्चात 30 अंकों में से परिवर्तित करने के उपरांत ग्रेड का निर्धारण किया जाएगा।

संकलित परीक्षाओं हेतु विभाजन

खण्ड	विभाग	अंक	कुल अंक
क.	1.अपठित गद्यांश–बोध	2×5=10	20
	2.अपठित पद्यांश–बोध	2×5=10	
ख.	व्याकरण	5×4=20	20
ग.	पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग–1	30	40
	पूरकपाठ्यपुस्तक संचयन भाग-1	10	
घ.	लेखन	10	10

कक्षा नौवीं हिन्दी 'ब'- संकलित परीक्षाओं हेतु परीक्षा विनिर्देशन 2010-2011

खण्ड-क : अपठित बोध

प्रश्न संख्या 1-4 **(20 अंक)**

- दो अपठित गद्यांश 100 से 150 शब्द
- दो अपठित काव्यांश 100 से 150 शब्द

उपर्युक्त गद्यांश व पद्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर **चार प्रश्न** पूछे जाएँगे प्रत्येक प्रश्न के **पाँच बहुवैकल्पिक** भाग होंगे तथा प्रत्येक भाग का **एक अंक** होगा ।

खण्ड-ख : व्यावहारिक व्याकरण

प्रश्न संख्या 5-9 **(20 अंक)**

निर्धारित विषयों पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर **पाँच प्रश्न** पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न **4 अंक** का होगा।

खण्ड-ग : पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग–1 व पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन भाग–1

प्रश्न संख्या 10-16 **(40 अंक)**

प्रश्न संख्या 10

पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के निर्धारित पाठों में से कोई **दो** पद्यांश दिए जाएँगे तथा इन पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर बहुवैकल्पिक **पाँच** प्रश्न पूछे जाएँगे तथा इस प्रत्येक प्रश्न के **चार विकल्प** होंगे तथा प्रत्येक भाग का **एक अंक** होगा । छात्रों को कोई **एक** पद्यांश करना होगा।**(5 अंक)**

प्रश्न संख्या 11

पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के गद्य पाठों के आधार पर **तीन लघुउत्तरीय** प्रश्न पूछे जाएँगे । इन प्रश्नों का कुल भार नौ **अंक** होगा (3+3)। छात्रों को कोई **दो प्रश्न** करने होंगे । ये प्रश्न छात्रों की साहित्य को पढ़कर समझ पाने की क्षमता के आकलन पर आधारित होंगे। **(6 अंक)**

प्रश्न संख्या 12

पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के निर्धारित पाठों (गद्य) पर **पाँच अंक** का **एक** निबंधात्मक प्रश्न पूछा जाएगा **(विकल्प सहित)** । यह प्रश्न छात्रों की हिंदी के माध्यम से अपने अनुभव को लिखकर सहज अभिव्यक्ति कर पाने की क्षमता का आकलन करने पर आधारित होगा। **(5 अंक)**

प्रश्न संख्या 13

पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के निर्धारित पाठों (गद्य) में से **दो गद्यांश** दिए जाएँगे तथा इस में से छात्रों को कोई **एक करना होगा** । इस पर **तीन या चार लघुउत्तरीय प्रश्न** पूछे जाएँगे । इन प्रश्नों का कुल भार **पाँच** अंक होगा । यह प्रश्न हिंदी गद्य के संदर्भ में विषय तथा अर्थबोध की क्षमता का आकलन करने पर केंद्रित होंगे। **(5 अंक)**

प्रश्न संख्या 14

पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के पद्य पाठों के आधार पर **चार लघुउत्तरीय** प्रश्न पूछे जाएँगे । इन प्रश्नों का कुल भार नौ **अंक** होगा (3+3+3)। छात्रों को कोई **तीन प्रश्न** करने होंगे । ये प्रश्न कविताओं के विषय , काव्य बोध, अर्थ बोध व सराहना को सरल शब्दों में अभिव्यक्त करने की क्षमता पर

कक्षा नौवीं हिन्दी 'ब'– संकलित एवं फॉरमैटिव परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम का विभाजन

क्रम	पाठ्य पुस्तक	प्रथम सत्र (अप्रैल से सितम्बर)			द्वितीय सत्र (अक्तूबर से मार्च)		
पुस्तक स्पर्श (गद्य)		**FA 1 10**	**FA2 10**	**SA I 20**	**FA3 10**	**FA4 10**	**SA II 40**
1	धूल	✓		✓			
2	दुख का अधिकार		✓	✓			
3	एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा		✓	✓			
4	तुम कब जाओगे अतिथि				✓		✓
5	वैज्ञानिक चेतना के वाहक				✓		✓
6	कीचड़ का काव्य				✓		✓
7	धर्म की आड़					✓	✓
8	शुक्रतारे के समान					✓	✓
पुस्तक स्पर्श (पद्य)		**FA 1 10**	**FA2 10**	**SA I 20**	**FA3 10**	**FA4 10**	**SA II 40**
1	रैदास के पद	✓		✓			
2	रहीम के पद		✓	✓			
3	आदमी नामा		✓	✓			
4	एक फूल की चाह				✓		✓
5	गीत-अगीत				✓		✓
6	अग्निपथ					✓	✓
7	नए इलाके में, खुशबू रचते है हाथ					✓	✓
पुस्तक संचयन		**FA 1 10**	**FA2 10**	**SA I 20**	**FA3 10**	**FA4 10**	**SA II 40**
1	गिल्लू	✓		✓			

क्रम	पाठ्य पुस्तक	प्रथम सत्र (अप्रैल से सितम्बर)			द्वितीय सत्र (अक्तूबर से मार्च)		
व्याकरण		FA 1 10	FA2 10	SA I 20	FA3 10	FA4 10	SA II 40
1	वर्ण विच्छेद (3 अंक) ((एस-2 में 2 अंक))	✓		✓			✓
2	र् के विभिन्न रूप (1 अंक)	✓		✓			
3	अनुस्वार (1 अंक)	✓		✓			
4	अनुनासिक (1 अंक)	✓		✓			
5	नुक्ता (1 अंक)	✓		✓			
6	उपसर्ग-प्रत्यय से शब्द निर्माण (एस-1 में 4 अंक) (एस-2 में 2 अंक) (पाठों के आधार पर)		✓	✓			✓
7	पर्यायवाची(2 अंक) , विलोम (2 अंक), अनेकार्थी शब्द(2 अंक), वाक्यांशों के लिए एक शब्द(2 अंक (पाठों के आधार पर)		✓	✓			✓
8	वाक्य के अंग(2 अंक), -सरल वाक्य (2 अंक),				✓		✓
	विराम चिह्नों का प्रयोग				✓		✓
	मुहावरे-वाक्य प्रयोग(2 अंक), (पाठों के आधार पर)	✓		✓		✓	✓
	अपठित गद्यांश			✓			✓
	अपठित पद्यांश			✓			✓
	पत्र लेखन	✓		✓	✓		✓
	अनुच्छेद लेखन		✓	✓		✓	✓

पुस्तकें

1. पाठ्य पुस्तक स्पर्श भाग–1

2. पूरक पुस्तक संचयन–भाग–1

टिप्पणी:

1. *फॉरमैटिव मूल्यांकन का अभिप्राय अधिगम के मूल्यांकन से है। इसलिए विद्यालय उपर्युक्त विभाजन का अपनी सुविधानुसार उपयोग कर सकते हैं*

2. *फॉरमैटिव मूल्यांकन से संबधित सभी कार्यकलाप जैसे विभिन्न प्रकार के शैक्षिक खेल, पहेली, प्रतियोगिता, परियोजना (Project), भूमिका निर्वहन (Roleplay), कहानी लेखन, नाट्य रचनांतरण (Dramatisation), आदि* ***कक्षा में*** *अथवा* ***विद्यालय में*** *करवाये जाने वाले कार्यकलाप हैं। यदि कोई ऐसा कार्यकलाप है जिसमें विद्यालय से बाहर जाकर कार्य करने की आवश्यकता पड़ती है तो ऐसी स्थिति में यह कार्य शिक्षक के पर्यवेक्षण व मार्गदर्शन में होने चाहिए।*